

सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2025 का प्रथम अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। यह अंक महाकुम्भ विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इसमें सर्वप्रथम महामण्डलेश्वर स्वामी महेश्वरानन्दपुरीजी द्वारा लिखित YOGA SUTRAS OF PATANJALI शोध लेख में पातंजलयोगसूत्र के प्रतिपाद्य की आधुनिक सन्दर्भ में उपयोगिता दर्शायी गयी है। तत्पश्चात् महामण्डलेश्वर स्वामी ज्ञानेश्वरपुरी द्वारा लिखित 'मकर सौर संक्रान्ति' नामक लेख में मकर संक्रान्ति पर्व तथा इस दिन किये जाने वाले दान के महत्त्व को आयुर्वेद की दृष्टि से समझाने का प्रयास किया है। तत्पश्चात् जयप्रकाश शर्मा द्वारा लिखित 'मकर तथा कुम्भ स्नान महात्म्यः' लेख में आदि माघ मास में मकर संक्रान्ति पर त्रिवेणी संगम में स्नान करने के महत्त्व को उजागर किया है। इसी क्रम में गोपीनाथ पारीक 'गोपेश' द्वारा लिखित 'कुम्भस्नाने महाफलम्' लेख में सनातन संस्कृति को विश्व संस्कृति कहते हुए पर्व का अर्थ स्पष्ट करके कुंभ में स्नान करने की महत्ता को स्पष्ट किया है। तत्पश्चात् वैदिक साहित्य में प्रयागराज महत्त्व नामक लेख में प्रयाग शब्द की व्युत्पत्ति करते हुए साहित्यिक दृष्टि से प्रयागराज के महत्त्व को स्पष्ट किया है। साथ ही श्री महन्त हरिशंकर दास 'वेदान्ती' द्वारा लिखित 'कुंभस्नानविधिः' नामक लेख में कुंभ स्नान विधि, कुंभ स्वरूप, कुंभ प्रार्थना तथा स्नानान्त तर्पण किया का उल्लेख किया है। श्रीमती अंजना शर्मा के लेख 'स्कन्द पुराण में कुम्भोत्पत्ति की कथा' के पुराणानुसार कुंभ की उत्पत्ति की कथा को वर्णित किया है। इसी क्रम में श्रीमती प्रतिभा गर्ग द्वारा लिखित 'प्रयाग महात्म्यः' पौराणिक कथानुसार प्रयाग के महात्म्य का उल्लेख किया है। अन्त में स्व. डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के 'राष्ट्रोपनिषत्' के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा